Springboard ACADEMY

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

राजस्थान सिविल सेवा परीक्षा के लिए

महत्वपूर्ण नोट्स

(RPSC के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार)

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Plot A-1, Keshav Vihar, Riddhi Siddhi Chouraha, Gopalpura Bye Pass Jaipur

M.No. : 9636977490, 8955577492, Website : www.springboardindia.org

INDEX – IR - HINDI

TOPIC	PAGE
भारत व चीन संबंध	1
चीन – पाकिस्तान संबंध	13
भारत व USA	16
भारत व रूस संबंध	27
यूरोपीयन संघ	34
भारत–जर्मनी संबंध	40
भारत–फ्रांस संबंध	41
संयुक्त राष्ट्र संघ	44
विश्व राजनीति में अमेरिकी वर्चस्व	51
दक्षिण एशिया में भू–राजनीतिक एवं राजनीतिक विकास	54
अफगानिस्तान	69
बांग्लादेश	72
मालदीव	79
नेपाल	80
दक्षिण एशिया के संगठन	83
BISMSTEC (बिम्सटेक)	87
शंघाई सहयोग संगठन (SCQ)	89
निर्यात नियंत्रण समूह	91
पश्चिमी एशिया	92
सीरिया संकट	95
यमन संकट	97
कतर संकट	97
इजराइल–फिलीस्तीन विवाद	98
दक्षिण–पूर्वी एशिया	102
BRICS	105
गुट निरपेक्ष आंदोलन	108
आसियान – ASEAN	110
भारत – आसियान संबंध	112
भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व	116

Springboard ACADEMY

International Relations

भारत व उसके पड़ोसी देश

1. भारत व चीन संबंध :–

– चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

– सबसे बड़ा आयाताक व निर्यातक देश है।

– राजनीतिक रूप से साम्यवाद को अपनाया गया है।

– चीन में 22 प्रांत है, 5 स्वायत्त क्षेत्र है।

– 1 विशेष रूप से प्रशासित क्षेत्र है। (हांगकांग व मकाऊ)

U.K. उपनिवेश पुर्तगाल

1997 1999

– चीन के समाज में हाल मूल के लोग बहुसंख्यक है। तथा मंगोल, उद्धुर मुसलमान व तिब्बती बौहद अल्पसंख्यक है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि :–

– 1912 तक राजतंत्रात्मक शासन

– 1912 में गणतंत्रात्मक शासन स्थापित हुआ।

– मुख्य राजनीतिक पार्टी कुओमिलतांग थी। मुख्य नेता – चियांग काई शेक।

– साम्यवादी नेता माओत्से तुंग के द्वारा Communist Party of China की स्थापना की।

– कुओमितांग व CPC के मध्य सत्ता के लिए संघर्ष हुआ। अंततः 1949 में CPC की जीत हुयी।

–CPC के आधिपत्य वाले चीन को Peoples Republic of China (PROC) कहा जाता है।

– ताइवान द्वीप पर कुओमिनतांग पार्टी का शासन था, इसे Republic of China कहा जाता है।

– प्रारंभ में पश्चिमी देशों के द्वारा PROC को मान्यता नहीं दी गयी।

– भारत उन पहले देशों में से था जिससे PROC को मान्यता दी।

– प्रारंभ में संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता भी ROC को दी गयी।

– 1972 में यह PROC को स्थानांतरित की गयी।

Springboard ACADEMY

तिब्बत समस्या :–

– 1912 में तिब्बत ने चीन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

– 1949 में Communist Party ने तिब्बत पर अधिकार करना अपना कर्त्तव्य बताया।

– 1950 में तिब्बत पर आक्रमण किया गया।

– 1951 में चीन व तिब्बत के मध्य संधि हुयी।

– इस संधि के अनुसार तिब्बत ने चीन का आधिपत्य स्वीकार कर लिया और तिब्बत को स्वायत्तता दी गयी।

– ब्रिटिश काल में तिब्बत को कुछ विशेष सुविधाएं दी गयी भारत में।

Ex. -
- डाक व तार की सुविधा भारत के अधीन होगी।
- एक भारतीय प्रतिनिधि तिब्बत में रहेगा।
- व्यापारिक कोठियां स्थापित करने का अधिकार

1954 में भारत व चीन के मध्य तिब्बत के मुद्दे पर संधि हुयी।

– इसी संधि की प्रस्तावना में पंचशील के सिद्धांत लिये गये।

पंचशील के सिद्धांत :–

1. दूसरे देशों की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखण्डता का सम्मान किया जाएगा।
2. किसी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
3. अन्य देशों से संबंध सम्मान व परस्पर लाभ के होंगे।
4. अनाक्रमणता
5. शांतिपूर्ण सह अस्तित्व

– 1956 के बाद से तिब्बत में चीन का हस्तक्षेप बढ़ गया।

– इस हस्तक्षेप के विरोध में बहुत से प्रदर्शन हुए।

– चीन की सरकार के द्वारा इन प्रदशनों को दबा दिया गया।

– 1959 में तिब्बती धर्म गुरू दलाई लामा अपने हजारों अनुयायियों के साथ भारत आए। और इन्हें भारत में M.P.में शरण दी गयी।

– इस घटना के बाद सीमा समस्या को पहली बार उठाया गया।

Springboard ACADEMY

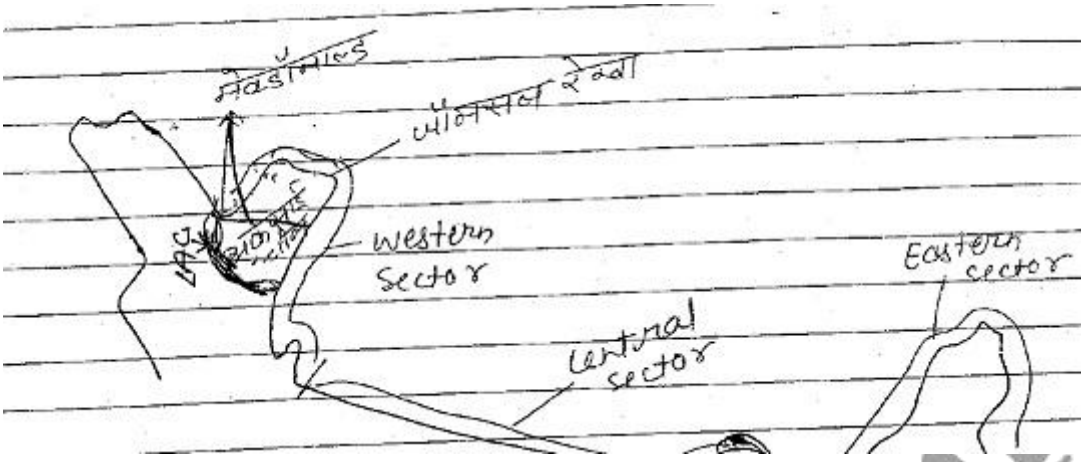

सीमा समस्या की तीन भागों विभाजित किया गया है :–

(i) Western Sector

(ii) Central Sector

(iii) Eastern Sector

Western Sector :-

–इस भाग में मुख्य विवाद अकसाई चीन के आधिपत्य को लेकर है।

– भारत का इस क्षेत्र में दावा जॉनसन रेखा से है, जो कि अकसाई चीन को भारत का हिस्सा बताती है।

– यह रेखा ब्रिटिश सर्वेक्षक W.H. जॉनसन के द्वारा 1865 में बनायी गयी।

– चीन इस रेखा को वैध नहीं मानता क्योंकि चीन के अनुसार उसे इसकी सूचना नहीं दी गयी। एक अन्य रेखा मैकडोनल्ड रेखा है, जो कि अकसाई चीन को 2 भागों में विभाजित करती है, चीन के अनुसार उसे इसकी सूचना दी गयी। यद्यपि इस पर कोई सहमति नहीं बनी।

– चीन का कब्जा पूरे अकसाई चीन पर है।

– इस कब्जे को LAC (Line of Actual Control) रेखा से दर्शाया जाता है।

– यह रेखा पूर्ण रूप से परिभाषित नहीं है, इस कारण समय–समय पर तनाव उत्पन्न होता है।

(ii) Central Sector :-

–M.P. और उत्तराखण्ड में लगभग 2000 km^2 का पहाड़ी क्षेत्र विवादित है।

– सिक्किम का उत्तरी क्षेत्र Finger HP Region कहलाता है।

– यह भी वर्तमान में विवादित है।

– सिक्किम को 2003 में चीन द्वारा मान्यता दी गयी।

(iii) Eastern Sector :-

Sprint Academy

– इस क्षेत्र में भारत का दावा मेकमेहन रेखा से है, यह रेखा 1914 के शिमला सम्मेलन में बनायी गयी। जिसमें भारत के प्रतिनिधि हेन्ती मेकमेहन थे।

– चीन इस रेखा को अवैध मानता है क्योंकि

1. यह समझौता भारत व तिब्बत के मध्य किया गया।

2. यह रेखा साम्राज्यवादियों के द्वारा बनायी गयी।

– चीन भारत के लगभग 90,000 km^2के क्षेत्र पर दावा करता है, और वह उसे दक्षिणी तिब्बत मानता है।

– चीन के दोनों ही तर्क गलत है क्योंकि :–

1. तिब्बत 1912 में स्वतंत्र हो चुका था और वह एक सम्प्रभु राष्ट्र था।

2. साम्राज्यवादियों के द्वारा बनायी गयी अन्य रेखाओं को चीन मान्यता देता है। जैसे –म्यांमार

डोकलाम विवाद

– डोकलाम पठार भूटान के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। यह भूटान के इन तीन क्षेत्रों में से है, जिसके लिए चीन व भूटान के बीच विवाद है।

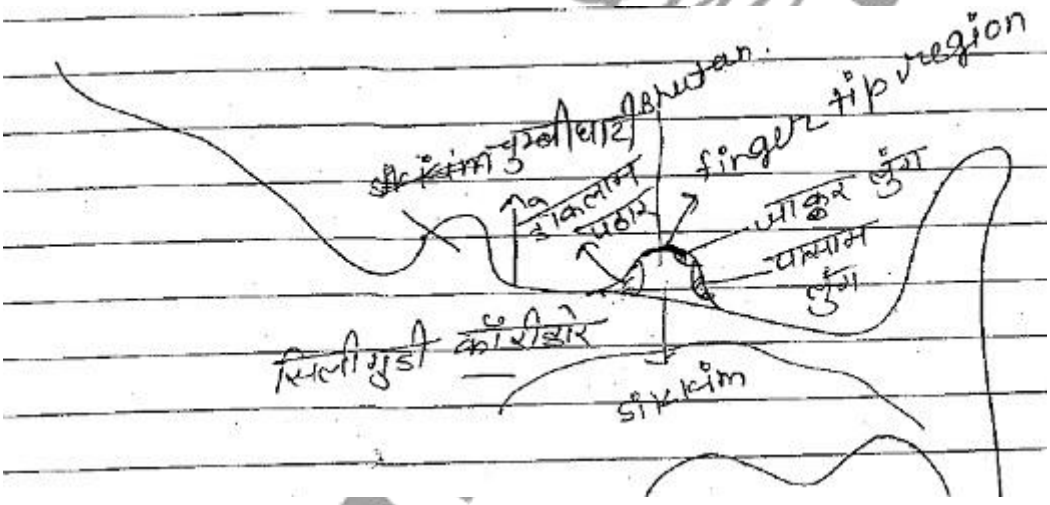

– चीन व अंग्रेजों के बीच 1890 में एक संधि की गयी थी। (Sino-British)

– चीन के अनुसार यह संधि ढोकलाम पठार को चीन का हिस्सा बताती है।

– परंतु भारत व भुटान इसका खण्डन करते है, चीन के द्वारा इस क्षेत्र में एक रोड़ का निर्माण किया जा रहा था, जिसका विरोध भारत के द्वारा किया गया, क्योंकि :–

1. भारत व भूटान के बीच 2007 की मित्रता संधि है, जो कि भूटान की रक्षा का दायित्व भारत को देती है।

2. भारत व चीन के बीच 2013 में सीमा सुरक्षा एवं सहयोग समझौता किया गया। जो कि सीमा के क्षेत्र पर यथा स्थिति को बनाए रखता है। चीन के द्वारा इस यथा स्थिति में परिवर्तन किया जा रहा था।

3. इस क्षेत्र का सामरिक महत्व है।

– क्योंकि उत्तर पूर्व के राज्यों को शेष भारत से जोड़ने वाला चिकन लेक कोरिडोर (सिलीगुडी) होकालान के पास स्थित है।

इस क्षेत्र से भारत पर आक्रमण किया जा सकता है।

– इस विवाद को हल करने के लिए भारत के द्वारा कूटनीतिक व रक्षा रणनीति का प्रयोग किया गया। लगभग 4 महीने तक यह गतिरोध चला जिसके बाद भारत व चीन की सेना इस क्षेत्र से पीछे हट गयी।

सीमा विवाद को हल करने के लिए किये गये प्रयास

1. 1974 में कुटनीतिक संबंधों की पुनः शुरूआत की गयी।

– 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन की यात्रा की। सीमा विवाद को हल करने के लिए एक संयुक्त कार्यदल का गठन किया गया।

और आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए संयुक्त आर्थिक दल का गठन किया गया।

– 1993 में सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए समझौता किया गया।

– 1996 में विश्वास बहाली समझौता।

– 2003 में सीमा विवाद को हल करने के लिए विशेष प्रतिनिधियों की नियुक्ति की गयी।

Ist विशेष प्रतिनिधि – बृजेश मिश्रा

वर्तमान – अजीत डोभाल

– अब तक दि. प्रति. की 19 दौर तक की बातचीत हो चुकी है।

2005 में सामरिक साझेदारी का समझौता किया गया।

– 2013 में सीमा सुरक्षा एवं सहयोग समझौता।

सुझाव :–

1. सामरिक साझेदारी को क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

2. Top to Bottom Approach की बजाए Bottom to Top अप्रोच को अपनाया जाना चाहिए। जिसके तहत LAC को परिभाषित करना तथा मध्य क्षेत्र के विवाद को हल करने जैसे कार्य किये जा सकते है।

3. सीमा विवाद के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाया जाना चाहिए।

– यह एक जटिल समस्या है, अतः इसे हल करने में समय लगेगा।

त्वांग मठ

– यह मठ अरूणाचल प्रदेश में स्थित है, यह तिब्बती बौहदों का दूसरा सबसे बड़ा मठ है।

– अगला दलाईलामा तवांग से हो सकता है।

– चीन तवांग क्षेत्र पर कब्जा करना चाहता है, क्योंकि यह मठ तिब्बती विद्रोह का केन्द्र बन सकता है। ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र भारत के अधीन रहा है। ब्रिटीश काल में भी इसकी प्रशासनिक व्यवस्था भारत द्वारा की जाती थी।

– इस क्षेत्र की यात्रा के लिए "Inner Line Permit" की आवश्यकता होती है।

समुद्री विवाद

हिन्द महासागर विवाद

दक्षिण चीन सागर विवाद

हिन्द महासागर में भारत के हित :–

1. हिन्द महासागर में स्थित द्वीपों की सुरक्षा (तटीय सीमा)
2. भारत का व्यापार :–

   मूल्य – 70 %

   आयतन – 94 %
3. ऊर्जा आयात

   लगभग 70% ऊर्जा आवश्यकता का
4. प्राकृतिक संसाधन जैसे – तेल, गैस, मत्स्य संसाधन खनिज पदार्थ।
5. प्राकृतिक आपदाओं पर अनुसंधान एवं आपदा प्रबंधन।

चीन की गतिविधियां (हिन्द महासागर में) :–

(i) String Of Pearls :- मोतियों की माला :–

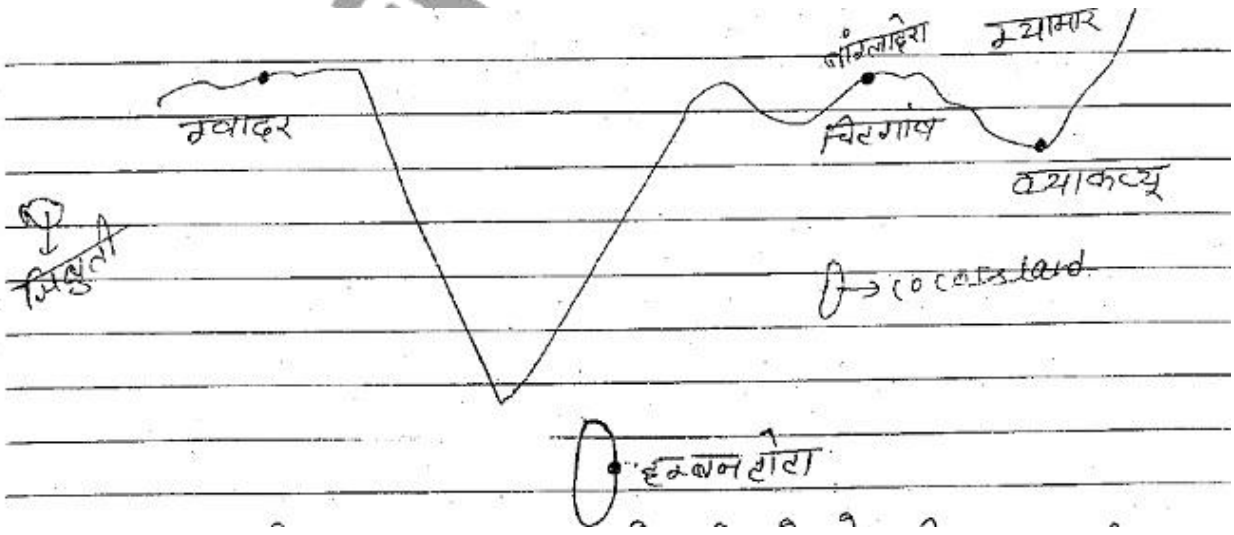

इस नीति के तहत् भारत को घेरने के लिए सामरिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर बंदरगाहों का निर्माण किया जा रहा है।

–यह अवधारणा U.S.A. के पत्रकार के द्वारा दी गयी है।

(ii)हिन्दी महासागर में अनेक सैनिक अड्डे स्थापित किए जा रहे है जैसे :–

बंगाल की खाड़ी में म्यांमार के COCO Island पर सैन्य अड्डा स्थापित किया गया है, जिसके माध्यम से भारत की पूर्वी तटीय सीमा पर निगरानी रखी जाती है।

(iii) मालदीव तथा जीबुती में सैन्य अड्डा स्थापित किए गए।

(iv) चीनी पनडुब्बियों की गतिविधियां हिन्द महासागर में बढ़ी है :–

जैसे :– कुछ समय पहले चीनी पनडुब्बियां कराची और कोलम्बो बंदरगाह पर पायी गयी।

– 2008 से चीन समुद्री लुटेरों के विरूद्ध अभियान में भाग ले रहा है। परंतु चीन के द्वारा आवश्कता से अधिक क्षमता के जहाजों का प्रयोग किया जा रहा है।

– थाइलैण्ड ने भी Kra Coral का निर्माण किया गया।

ऐसे जहाजों का प्रयोग फौज व बचाव कार्यों में किया जाता है।

दक्षिण–चीन सागर

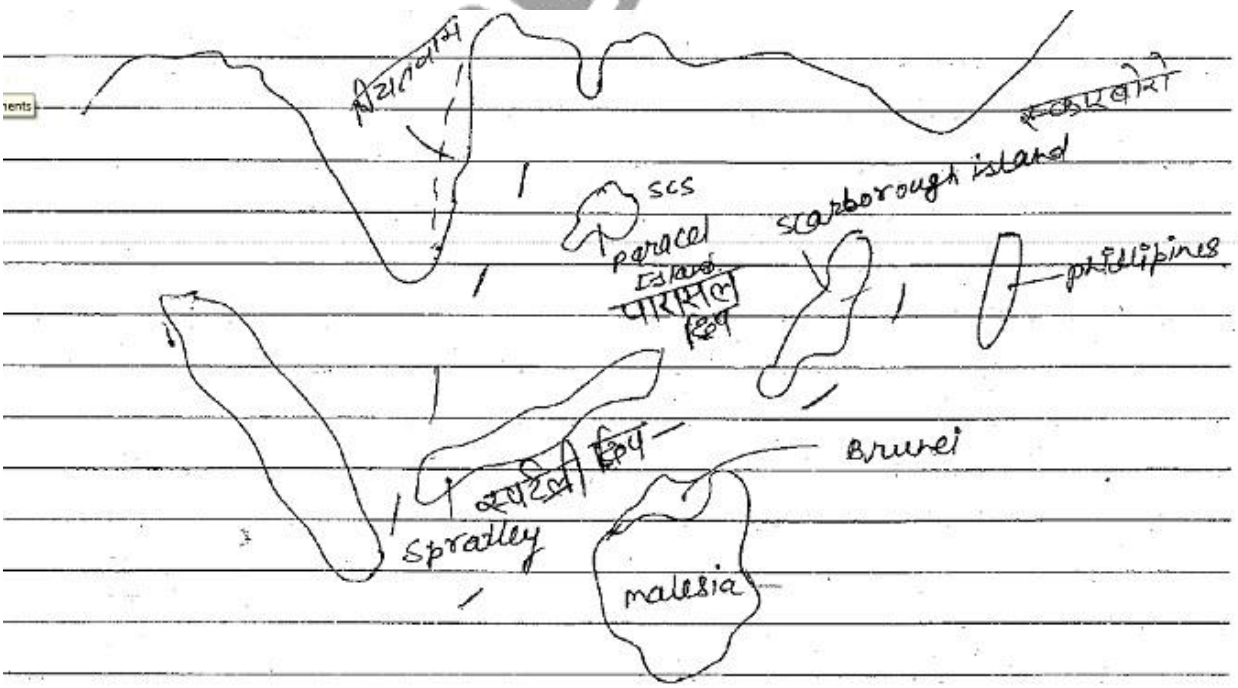

– दक्षिण चीन सागर में स्थित परासेल

स्प्रेटली

स्कारबोरो द्वीप समूहों पर चीन के द्वारा अधिकार कर लिया गया।

– चीन के द्वारा इन द्वीपों का सैन्यीकरण किया जा रहा है। जैसे – परासेल द्वीप समूह के वुडी द्वीप पर चीन के द्वारा मिसाइल प्रेक्षपण केन्द्र स्थापित किया गया।

– कृत्रिम द्वीपों का निर्माण भी किया जा रहा है।

– यह द्वीप समूह वियतनाम, मलेशिया, ब्रुनेई, फिलीपिन्स के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में आते है।

– चीन का यह आधिपत्य अंतर्राष्ट्रीय कानून UNCLOS का उल्लंघन है।

UNCLOS – United Nations Convention on Law of Sea

– चीन का दावा 9 Dash Line Theory से है। इसके अनुसार लगभग 90% South China Sea चीन के अधीन है।

प्रभाव :–

– वियतनाम, मलेशिया, ब्रुलेई, फिलीपिन्स आदि के हित प्रभावित होंगे।

– अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व संचार मार्ग भी प्रभावित होंगे तथा महाशक्तियों के बीच टकराव बढ़ सकता है।

– अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होगा।

– अंतर्राष्ट्रीय नियमों की अवहेलना से अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था प्रभावित होगी।

–ASEAN देशों से भारत के संबंध प्रभावित होंगे।

– हाल ही में स्कारबोरो द्वीप समूह पर अधिकार के लिए फिलीपिन्स के द्वारा मध्यस्थता के स्थायी न्यायालय में चीन के विरूद्ध अपील की गयी। इस न्यायालय ने फिलीपिन्स के पक्ष में फैसला दिया। परंतु चीन ने इस फैसले को मानने से इंकार कर दिया।

ONGC Dispute

– 1988 से ही ONGC दक्षिण चीन सागर में तेल व गैस संसाधनों की खोज का कार्य कर रहीं है।

– 2011 मे वियतनाम के द्वारा 2 तेल क्षेत्र ONGC को दोहन के लिए दिये गये परंतु चीन के द्वारा इस गतिविधि का विरोध किया गया।

– वर्तमान में पुनः भारत व वियतनाम के मध्य तेल–दोहन के लिए समझौता किया गया।

Sprinboard ACADEMY

भारत व चीन के मध्य आर्थिक संबंध

– भारत व चीन के मध्य द्विपक्षीय व्यापार $ 71 Billion Dollar है।

China Export – 61 billion Dollar

India Export – 10 billion Dollar

व्यापार घाटा –51 Billion Dollar

व्यापारिक घाटे के कारण :–

– चीन के उत्पाद सस्ते होते है क्योंकि :–

1. चीन के द्वारा समय–समय पर Dumping की जाती है।
2. मुद्रा का अवमूल्यन किया जाता है।
3. बड़े स्तर पर उत्पादन के कारण, प्रति उत्पाद लागत कम होती है।
4. मजदूरों व पर्यावरण संबंधी नियम सरल है।
5. सशक्त आधारभूत ढांचा।

– भारतीय निर्यात कम है क्योंकि :–

• चीन में भारतीय उत्पादों को बाजार उपलब्ध नहीं करवाया जाता है।

• भारत के उत्पादों को समय–समय पर प्रतिबंधित किया जाता है जैसे :– बासमती चावल, जेनेरिक दवाईयां आदि।

• भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक कमियां हैं। जिसके कारण उत्पादों की लागत अधिक होती है।

व्यापारिक घाटे को कम करने के लिए किये गये प्रयास :–

– भारत में चीन के निवेश को बढ़ाया जा रहा है।

E.g.- चीन की राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान 20 billion Dollar में निवेश की घोषणा की गई।

• चीन के साथ सामरिक एवं आर्थिक वार्ता का आयोजन हाल ही में 5 वीं वार्ता का आयोजन भारत में किया गया जिसमें चीन के बाजारों को भारतीय उत्पादों के लिए खोलनें पर सहमति बनी।

– भारत के द्वारा भी व्यापार नीति में परिवर्तन किया गया है, और गैर परम्परागत निर्यातों पर जोर दिया जा रहा है।

E.g. – Bollywood

Belt and Boad Intiative (पहल)

– इस पहल में 2 मुख्य परियोजनाएं है।

Springboard ACADEMY

1. सिल्क रोड आर्थिक बेल्ट (भूमि पर)

2. Maritione Sille Road (समुद्र में)

– इस पहल की घोषणा 2013 में कजाकिस्तान में की गयी।

– धीरे–धीरे इसका विस्तार किया गया।

– इस पहल में चीन को यूरोप, अफ्रीका, एशिया, अमेरिका से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

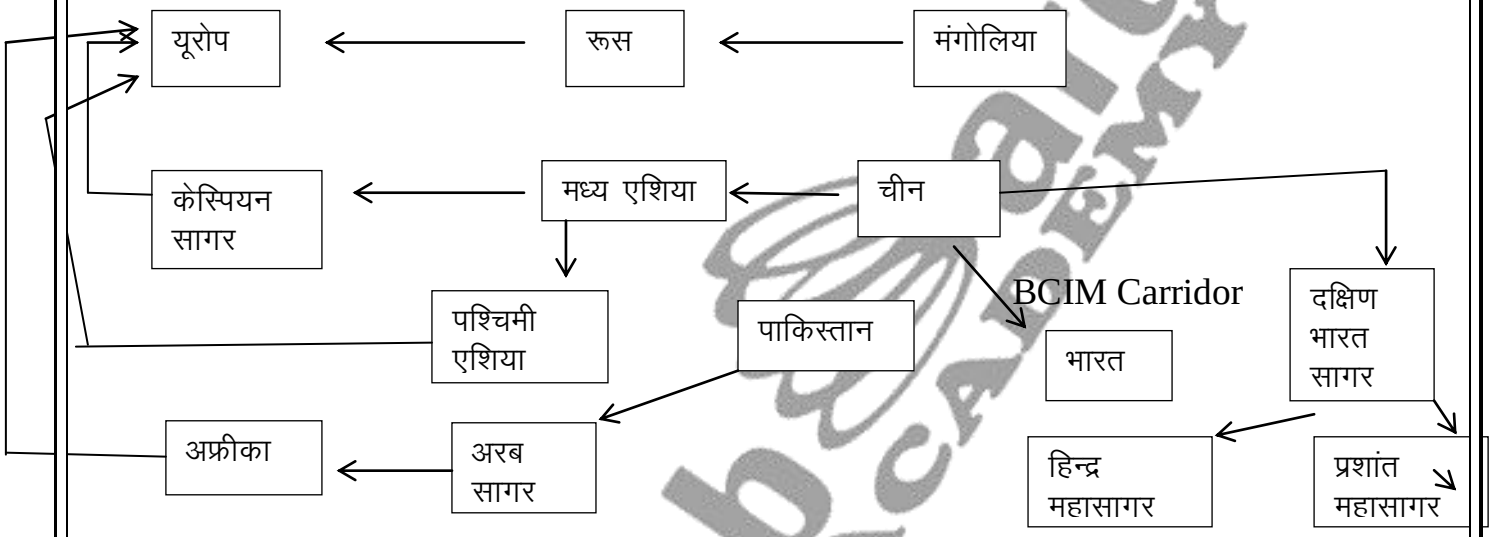

Silk Road Economic Belt का निर्माण भूमि पर किया जाएगा, इसके तहत Industry at park, Railways, Highways, Oils Gas, pipelines, Energy परियोजननाएं, संचार परियोजननाएं आदि विकसित किये जाऐंगे।

Maritione Silk Road का निर्माण समुद्री क्षेत्र में किया जाएगा। इसके तहत बंदरगाहों का निर्माण, जहाज मरम्मत केन्द्रों, रिफाइनरी, मालगोदाम आदि विकसित किये जाऐंगे।

–BRI के उद्देश्य :– इस परियोजना के सामरिक तथा आर्थिक उद्देश्य :–

A. आर्थिक उद्देश्य :–

1. चीन के निर्यात को बढ़ाना।

2. चीन की कंपनियों के निवेश को बढ़ाना।

3. चीन के वित्तीय संस्थानों के प्रभुत्व को बढ़ाना।

4. चीन की मुद्रा की स्वीकार्यता को बढ़ाना।

B. सामरिक उद्देश्य :–

1. परियोजना में सम्मिलित देशों में Soft Power का प्रयोग करना, जिससे इन देशों के निर्णय को प्रभावित किया जा सकता है।

2. हिन्द महासागरीय क्षेत्र में भारत के प्रभुत्व को कम मध्य एशिया में रूस के प्रभुत्व को कम यूरोप एशिया, प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में U.S.A. के प्रभुत्व को कम करना।

3. इन देशों की सूचनाओं पर नियंत्रण स्थापित करना।

4. चीन स्वयं को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकेगा।

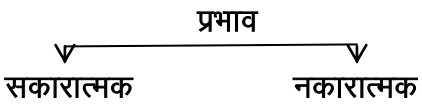

सकारात्मक प्रभाव :–

1. आधारभूत ढांचे के निर्माण को विश्व व्यापार बढ़ेगा।

2. रोजगार उपलब्ध होंगे, जिससे राजनीतिक अस्थिरता कम होगी।

नकारात्मक प्रभाव :–

1. यह परियोजना सदस्य देशों की संप्रभुता का हनन करेगी।

2. सदस्य देश ऋण के कु चक्र में फंस जायेंगे।

3. महाशक्तियों के बीच टकराव बढ़ेगा।

4. चीन की कंपनियां पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएगी, मानवाधिकार हनन बढ़ेगा।

भारत की प्रतिक्रिया :–

– भारत में इस परियोजना का विरोध किया, क्योंकि इसका एक भाग CPEC पाक अधिकृत से गुजरता है। इस क्षेत्र में चीन की गतिविधियां भारत की संप्रभुता के विरूद्ध है।

– इस परियोजना के नकारात्मक प्रभाव भी भारत के द्वारा उजागर किये गये।

– इस परियोजना की प्रतिक्रिया में :–

Project – Mousam Project – Spice Route

Project – Cotton

आदि की चर्चा भारत के द्वारा की गई।

U.S.A., जापान, भारत ने मिलकर एशिया, अफ्रीका Growth Corridor की घोषणा की है।

– इस परियोजना के लिए 900-1000 billion Dollar वित्त की आवश्यकता होगी।

– मुख्य रूप से वित्तीय सुविधा चीन के राष्ट्रीय बैंकों के द्वारा उपलब्ध करवायी जाएगी। यद्यपि कुछ नये संस्थानों का निर्माण भी किया गया है।

AIIB – Asian Infrastructure and Investment Bank

स्थापना – 2016

Springboard ACADEMY

मुख्यालय – बिजिंग

सदस्य देश – 87

कुल पूंजी – 100 Billion Dollar

सबसे बड़ा भागीदार – चीन

दूसरा – भारत

– एक बहुउद्देश्यीय बैंक जो कि एशिया व उसके देशों को आधरभूत ढांचे का निर्माण तथा सतत् विकास की परियोजनाओं को वित्त उपलब्ध करवाएगा।

– नये वित्तीय संस्थानों का निर्माण निम्नलिखित कारणों से किया गया :–

1. वित्त की आवश्यकता :– वर्तमान वित्तीय संस्थान आवश्यकता को पूरा करने में असमर्थ है। यह संस्थान इस आवश्यकता को पूरा करने में मदद करेंगे।

2. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं पर पश्चिमी देशों व उसके सहयोगियों का प्रभाव है, नये संस्थानों के निर्माण से इनका प्रभुत्व कम होगा।

3. वर्तमान वित्तीय संस्थाओं को सुधार के लिए बाह्य किया गया है।

ब्रह्मपुत्र नदी विवाद

1. दागु
2. जिक्षु
3. जागमो
4. जिमाचा

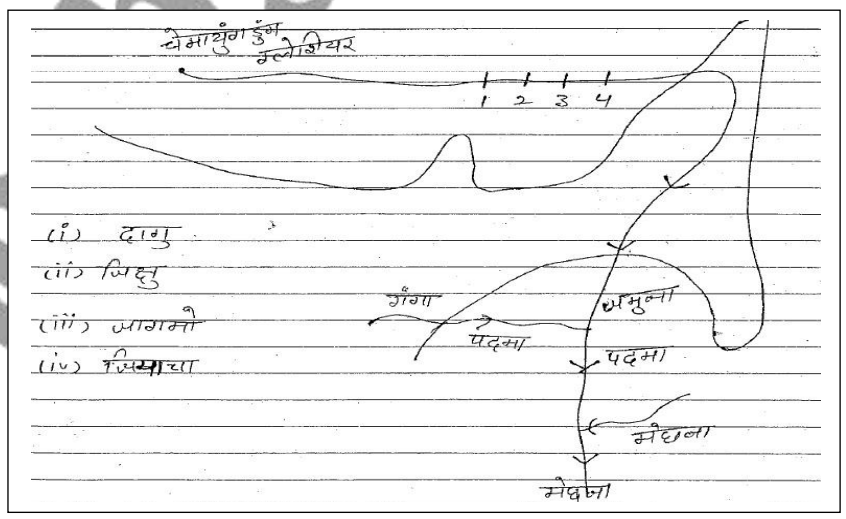

– ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन के द्वारा बांधों का निर्माण किया जा रहा है। इसका विरोध भारत के द्वारा किया गया क्योंकि

1. नदी का पानी रोकने या संग्रहित करने से भारत सूखे व बाढ़ की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है।

2. भारत में चल रही जल विद्युत परियोजनाएं – सुवर्णशिरी
उच्च सिकीयांग प्रभावित होगी।

3. नदी का परिस्थितिकीय तंत्र प्रभावित होगा।

4. बांग्लादेश के साथ जल बंटवारे का विवाद बढ़ सकता है।

5. नदी का नौवहल प्रभावित होगा।

– चीन की प्रतिक्रिया है कि यह परियोजनाएं Run of The River प्रकार की है। यद्यपि उपग्रह से प्राप्त चित्र इस बात का खण्डन करती है।

– इस समस्या को हल करने के लिए सिंधु नदी जल समझौते की तर्ज पर एक जल बंटवारे की संधि की जानी चाहिए।

– इसमें WB की मध्यस्थता भी ली जा सकती है।

चीन – पाकिस्तान संबंध

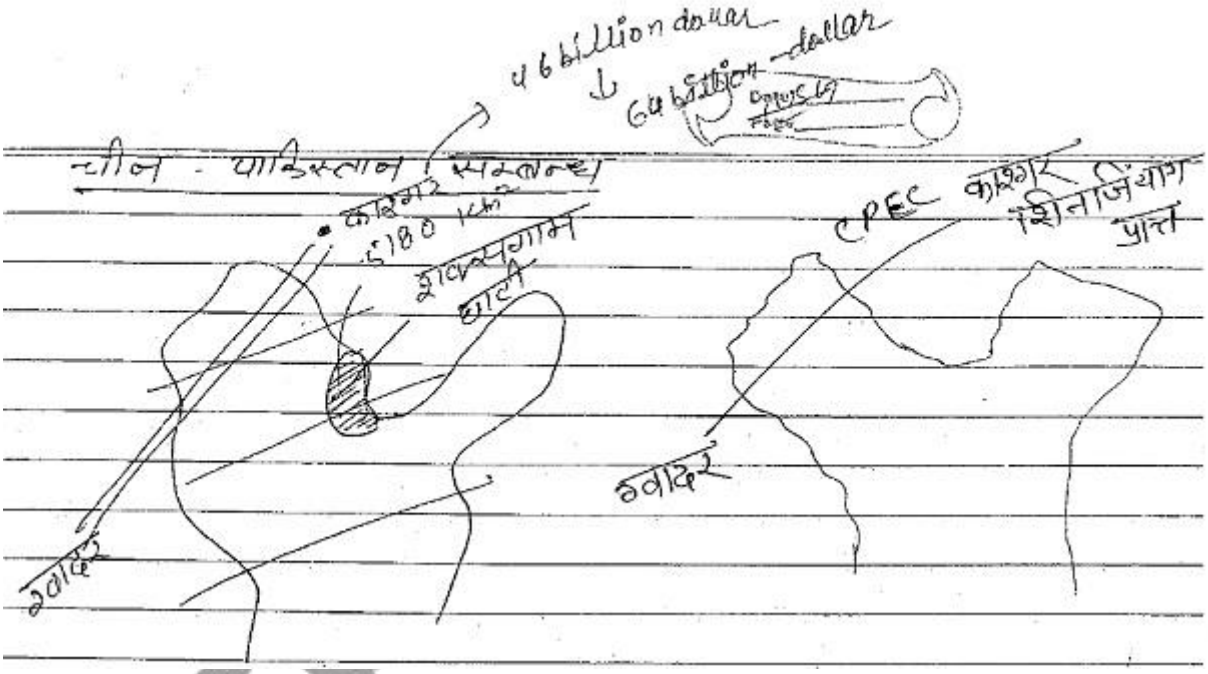

– चीन व पाकिस्तान के बीच 1963 में सीमा संबंधी समझौता किया गया। इस समझौते में 5180 km^2 वाली शक्सगाम घाटी चीन को दे दी गयी।

– 1974 में भारत के परमाणु परिक्षणों का विरोध चीन के द्वारा किया गया।

– पाकिस्तान के मिसाइल कार्यक्रम व परमाणु कार्यक्रम में चीन के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभायी गयी।

– चीन सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता तथा NSG में भारत की सदस्यता का विरोध करता है।

– पाकिस्तान आधरित आतंकवादियों का भी समर्थन करता है।

E.g.- मसूद अजहर

संगठन – जैश – ए – मौहम्मद

–CPEC – China Pakistan Economic Corridor

– इसमें काश्गार से ग्तादर तक औद्योगिक गलियारे का निर्माण किया जा रहा है।

कुल निवेश :–

– यह BRI का ही भाग है। 46 Billion Dollar चीन द्वारा

मुख्य परियोजनाएं :–

पाक अधिकृत कश्मीर में दायमर भासा बांध

बहावलपुर में – कायदे – ए – आजममे सौर संयंत्र

शाहीवाल क्षेत्र में – कोयला संयंत्र

ग्वादर बंदरगाह का निर्माण।

वुहान शिखर वार्ता

– हाल ही में भारत व चीन के बीच एक मनौपचारिक वार्ता का आयोजन किया गया।

– इसमें कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गयी।

जैसे :–

- सीमा विवाद को हल करने के लिए प्रयास किये जायेंगे।
- सीमा के प्रभावी प्रबंधन के लिए सेना को सामरिक निर्देश दिये जायेंगे।
- व्यापार घाटे को कम करने के प्रयास किये जायेंगे।
- आतंकवाद तथा अफगानिस्तान में शांति स्थापित करने के लिए भारत व चीन संयुक्त प्रयास करेंगे।
- जनसंपर्क पर जोर दिया जाना चाहिए।

STRENGTH का प्रयोग

S – Sprituality धार्मिकता / आध्यात्मिकता

T – Trade Tradition Technology (व्यापार परम्परा प्रौद्योगिकी)

R – Relationship

E – Entertainment

N – Nature

G – Games

Springboard ACADEMY

T – Tourism पर्यटन

H – Health

One China Policy

– इस नीति के अनुसार चीन ताइवान का स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता नहीं देता है। वह ताइवान को चीन का ही भाग मानता है।

– इस नीति के अनुसार दूसरे देशों पर शर्त रखी जाती है कि वह चीन व ताइवान के साथ एक साथ कूटनीतिक संबंध नहीं रख सकते।

– इस नीति का प्रयोग भारत के द्वारा POIC में चीन की गतिविधियों के विरूद्ध में किया जा सकता है।

संविधान संशोधन

– हाल ही में चीन के संविधान में 14 वर्ष बाद संशोधन किया गया, जिसमें राष्ट्रपति के लिए 2 वर्ष कार्यकाल की सीमा को समाप्त कर दिया गया।

– शी जिनपिंग के समाजवादी विचारों को इसमें सम्मिलिति किया गया है।

– शी जिनपिंग CPC का प्रमुख, सेना प्रमुख व राष्ट्रपति तीनों पद है।

भारत व USA के संबंधों को तीन काल खण्डों में बांटा जा सकता है।

1. 1947 – 1991

इस काल में भारत व USA के संबंध नकारात्मक न रहे। प्रारंभ में भारत को पूंजीवाद गुट में शामिल होने का आग्रह किया गया। लेकिन भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति अपनायी।

– 1955 में पाकिस्तान USA के गुट का सदस्य बन गया। इसके बाद USA की नीति भारत के प्रति नकारात्मक हो गयी।

– 1965 के युद्ध में पाकिस्तान को Patton Tanks उपलब्ध करवाये गये।

तथा पाकिस्तान का समर्थन किया गया।

– भारत के द्वारा वियतनाम युद्ध की आलोचना की गयी जिसके बाद भारत को मिलने वाला खाद्य आपूर्ति का कार्यक्रम (PL -480) रोक दिया गया।

– 1971 के युद्ध में USA पूर्ण रूप से पाकिस्तान के समर्थन में आ गया था।

– 1974 में भारत के द्वारा किए गए परमाणु परिक्षणों का विरोध USA के द्वारा किया गया।

– भारत के विरोध में NSG की स्थापना की गयी।

NSG – Nuclear Supplier Group

– राजीव गांधी के काल में उच्च तकनीक साझा करने के लिए एक समझौता किया गया यद्यपि यह क्रियान्वित नहीं हुआ।

• नेहरू ने भारतीय विदेश नीति के 3 आधार स्तम्भ बताये :–
1. शांति
2. मित्रता

3. समानता

• राजीव गांधी ने विदेश नीति की 4 बातों पर विशेष जोर दिया :– 4 D

1. निशस्तीकरण (Disornament)

2. उपनिवेशवाद का उन्मूलन (Decalinization)

3. विकास (Development)

4. शांति की कूटनीति

• गुजरात सिद्धांत :–

– पड़ोसी देशों से मधुर संबंधों के विषय में।

– 1996 में भारत के विदेशमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल ने लंदन भाषण में कहा :–

1. पड़ोसी व दक्षिणी एशियाई देशों के साथ मधुर संबंध पर जोर।

2. दक्षिण एशिया के किसी भी देश को अपनी भूमि, इस क्षेत्र के रहने वाले किसी अन्य देश के विरूद्ध प्रयोग नहीं होने देनी है।

3. आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं।

4. एक–दूसरे की सीमा व सार्वभौमिकता का सम्मान

5. दो देशों के विवादास्पद मुद्दे पारस्परिक बातचीत से निबटाना।

भारत व USA

– भारत व USA के संबंधों को 3 कालखण्डों में बांटा जा सकता है :–

1. 1947 – 1991 तक

2. 1991 – 2005

3. 2005 – वर्तमान

1. 1947 – 1991 तक :–

– इस काल में भारत व USA के संबंध नकारात्मक रहे।

– प्रारम्भ में भारत को पूंजीवादी गुट में शामिल होने का आग्रह किया परंतु भारत में गुटनिरपेरक्षता की नीति अपनाई।

– 1955 में पाकिस्तान USA के गुट का सदस्य बना।

– इसके बाद USA के नीति भारत के प्रति नकारात्मक हो गई।

– 1965 के युद्ध में पाकिस्तान को पेट्रन टैंक उपलब्ध करवाये गये। तथा USA द्वारा पाकिस्तान का समर्थन किया गया।